P: ISSN No. 2231-0045 RNI No. UPBIL/2012/55438 VOL.-7, ISSUE-2, November-2018
E: ISSN No. 2349-9435 Periodic Research

'नीला आकाश' में दलित चेतना के विविध आयाम

राजमुनि
सह–आचार्य,
हिन्दी विभाग,
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी

सारांश

डॉ0 सुशीला टाकभौरे संदेश देती हैं कि दूसरों को बदलने से पहले हमें स्वयं बदलना चाहिए। जो दलित लोग सवर्णों के साथ रोटी–बेटी के सम्बन्ध की बात करते हैं, उन्हें सबसे पहले आपस में रोटी–बेटी का सम्बन्ध स्थापित करना चाहिए। दलित स्त्री एवं दलित पुरुष आपस में एक दूसरे का सम्मान करें तथा एक दूसरे के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चलें। ''दलित जातियों के बीच अर्न्तजातीय विवाह होने चाहिए। इससे दलित एकता मजबूत होगी। दलितों के परिवार छोटे हों ताकि अनावश्यक खर्च से बचकर बच्चों की परवरिश अच्छी तरह से कर सकें। बच्चों को शिक्षा पाने के पूरे अवसर मिलें महिलाओं के विकास को भी महत्वपूर्ण मानना चाहिए। व्यक्तिगत जीवन के साथ सामाजिक उत्थान के कार्यों को भी महत्व दिया जाय। महिलाओं के पूर्ण व्यक्तित्व विकास को भी महत्वपूर्ण मानना चाहिए। पुरूष प्रधान समाज व्यवस्था में स्त्री सबलता जरूरी है, तभी स्त्री–पुरूष समानता की भावना आ सकेगी। भीकूजी एवं चन्दरी जैसे पात्र केवल स्वयं तक सीमित नहीं हैं। वे अपने दलित समाज की मुक्ति और उत्थान के लिए प्रयासरत हैं।''[1]

मुख्य शब्द : बिखरे पड़े, कटोरा, खटिया, गमछा, चूल्हा, खूटियों, कुँआ, ढ़ोर, डंगर, पल्लर, ओढ़ी, ब्लाउज, खाल, खरी–खोटी, छुआछूत, पट्टी, मास्टर, घड़ा, लोटा, गड्ढे, पुड़िया, पल्लू, बकरिया, अठन्नी

प्रस्तावना

इस उपन्यास की भूमिका में सुशीला टाकभौरे ने स्वयं कहा है कि नीला आकाश मुख्य रूप से दलितों की व्यथा और एकता की कथा है। नीलिमा और आकाश भविष्य की सम्भावनाओं के प्रतीक है। भारतीय समाज में दलित और उनकी कला को लेकर लोगों का नजरिया सदैव नकारात्मक एवं उपेक्षा भरा ही रहा है। ऐसा लगता है कि सवर्णों ने कला को भी अपनी सम्पत्ति मान रखा है। कला को वे जाति से जोड़कर देखते हैं। इसीलिए दलित कलाकारों को भी कलाकार न समझते हुए वे उसे जाति के नाम से ही सम्बोधित करते हैं– ''मान–सम्मान की बात अलग है, कलाकारी का सम्मान भी अलग, मगर पेट का सवाल सबसे अहम बात है। ये गरीबों की मजबूरी बन जाती है। उच्च जाति के कलाकारों को अधिक सम्मान धन और गौरव दिया जाता है। जबकि दलित अछूत कलाकार की कला को भी निम्न दृष्टि से देखा जाता है। दलित होने से उनकी कला भी निम्न हो जाती है। चन्द सिक्के उनकी तरफ फेंककर जैसे उनपर उपकार किया जाता है।''[2]

दलितों में आपसी भेदभाव इस जाति व्यवस्था के कारण ही उत्पन्न हुआ है। यह जाति व्यवस्था वह जहर है जो सवर्ण और दलित को ही नहीं बाँटता है बल्कि दलित–दलित को भी अलग करता है। यदि ध्यान से देखा जाए तो दलितों में आपसी भेदभाव ब्राह्मणवाद एवं मनुवाद की व्यवस्था के कारण ही उत्पन्न हुआ है। दलित जातियाँ भी अन्य दलित जातियों को अपने से छोटा मानने पर तुली हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य है कि प्रत्येक व्यक्ति को आशावादी सोच के साथ समय की मांग को ध्यान में रखकर ही आगे बढ़ना चाहिए। लाख विरोध के बाद भी शिक्षा एवं सामाजिक परिवर्तन की भूख को सदैव जिन्दा रखना चाहिए वे ही लोग स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं जो जाति, धर्म, अंधविश्वास एवं भेदभाव को छोड़कर मानव मात्र से प्रेम करते हैं। शिक्षा स्वास्थ्य न्याय एवं सुरक्षा की दृष्टि से मानव को सर्वोपरि रखा जाय। बिना किसी भेदभाव के पूरे विश्व में मानव प्रेम से बड़ी कोई दौलत नहीं होती। जो देश मानवीय हितों का सर्वप्रथम ध्यान रखता है वही सबसे सुखी व सम्पन्न रह सकता है। डॉ0 सुशीला टाकभौरे ने नीला आकाश उपन्यास के माध्यम से

मानवीय संवेदनाओं को जिन्दा रखने की अपील की है। इसी से फेलेगी प्यार की सुगन्ध जो विश्व में अपने देश की अलग पहचान बनायेगी।

साहित्यावलोकन

कैलाशचन्द चौहान के अनुसार ''डॉ0 सुशीला टाक भौरे यह बताने में सफल रही हैं कि वाल्मीकि समाज, मातंग समाज बदलाव के लिए ठहरा हुआ समाज नहीं है, बल्कि बदलाव के लिए लगातार संघर्ष कर रहा है और तड़प रहा है। भीकूजी, चंदरी फिर बाद में नीलिमा, आकाश जैसे उपन्यास के पात्र इसी तरफ इशारा करते है। और बताते हैं कि चाहे मुटठी भर ही सही समाज के लोग बदल रहे है।''

1. डॉ0 धीरज भाई बणकर का मानना है कि 'नीला आकाश एक अनुभव सम्पन्न उपन्यास है जिसमें दलित वर्गो के बीच रोटी एवं बेटी का व्यवहार, भाईचारे का भाव तथा जागरूक समाज की स्थापना करना लेखिका का उद्देश्य है।'
2. डॉ0 भारग्रेट बी0जी0 लिखते हैं कि 'नीला आकाश दलित जीवन के कठोर यथार्थ का जीवन्त दस्तावेज है, जो अतीत, वर्तमान की आशाओं, आकांक्षाओं को व्यक्त करता है। यह उनकी शिक्षा, जाग्रति, सशक्तिकरण, उत्थान तथा मुक्ति का प्रबल इतिहास है। लेखिका के अपने शब्दो में ''यह सिर्फ दलित कथा नहीं बल्कि बेबानी, मोहीभंग आशावहिता की कथा है।'
3. डॉ0 प्रमोद कोपव्रत मानते हैं कि 'मुक्ति दूसरों से मात्र नहीं अपने आप से भी चाहिए, बनी–बनायी परिपाटी से, घिसीपिटी परम्पराओं से, जर्जर मान्यताओं से जाति के ऊपर इंसानियत की स्थापना उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है।'
4. जहाँ तक मेरा मानना है सामाजिक परिवर्तन के लिए स्वयं की सोच में परिवर्तन जरूरी है। सोच में परिवर्तन का मुख्य कारण है पश्चिमी शिक्षा एवं आपसी सम्बन्धों में रोटी–बेटी का सम्बन्ध। स्वास्थ्य, शिक्षा, न्याय एवं सुरक्षा प्राप्त करने के लिए जीवन के प्रत्येक स्तर पर मानवता की स्थापना करना अनिवार्य है। बिना मानवीय संवेदना के जीवन एवं समाज की समस्त लड़ाईयाँ व्यर्थ ही सिद्ध होती है। यह समस्त कार्य आशावादी व्यक्ति ही ईमानदारी से कर सकता है। भले ही वह कम शिक्षित क्यों न हो?

यदि किसी व्यक्ति को जीवन भर गुलाम बनाए रखना हो तो उसे शिक्षा से वंचित रखो एवं धार्मिक अन्धविश्वासों में फँसाए रखो। दलितों के साथ इसी प्रकार का व्यवहार किया गया भीकू जी और चन्दरी अनपढ़ हैं लेकिन शिक्षा के महत्व को वे अच्छी तरह से जानते हैं। अधिक उम्र के बाद भी वे पढ़ाई के लिए कोशिश करते रहते हैं। भीकू जी के खानदान में काई पढ़ा–लिखा न होने के कारण सूप और डलिया को बनाने का काम इसीलिए कई पीड़ियों से चला आ रहा है। चन्दरी भीकूजी से हँसती हुई कहती है– ''भीकूजी अब इस उम्र में पढ़ाई करके क्या तुम्हें वकील बालस्टर बनना है? बेचारे लोग, नहीं जानते पढ़ाई क्या होती है ? कैसी होती है ?''[3]

जाति व्यवस्था कितनी भी पुरानी रही हो लेकिन कम पढ़े या अनपढ़ लोगों ने भी जाति व्यवस्था का घोर विरोध किया है क्योंकि जाति व्यवस्था से पीड़ित लोग इन्सान को इन्सान समझने का सन्देश बहुत समय से देते आ रहे हें। भीकू जी भी ऐसे नेक इन्सान हैं जो जातिवादी लोगों से बहुत घृणा करते हैं। तभी तो वह कहते हैं– ''कभी इनकी पीठ पीछे और कभी सामने भी जातिवादी लोगों को बेधड़क खरी–खोटी सुना देते हैं। जाति के बिना क्या इन्सान दिखाई नहीं देते तुम्हें ? अरे इन्सान को इन्सान समझो तभी तुम इन्सान कहलाओगे।''[4]

भीकू जी और चन्दरी जाति व्यवस्था का विरोध करने के साथ–साथ एक परिवर्तन की उम्मीद के साथ जीवन जीते हैं। क्योकि वे अच्छी तरह से समझ गए हैं कि भगवान् किसी 'इन्सान का षोशण नहीं कर सकता। समाज में ऊँच–नीच की भावना इन्हीं पण्डितों के द्वारा बनाई गई है। भीकूजी का गुस्सा देखकर चन्दरी बोली– ''मैं सब जानती हूँ इनकी चार सौ बीसी वाली बेईमानी। जातिभेद, ऊँच–नीच के सारे नियम कानून इन्हीं पण्डितों ने बनाए है और कहते हैं भगवान ने बनाए हैं।''[5] चन्दरी के मन में आक्रोश है लेकिन भीकू जी को पूरा विश्वास है कि एक दिन भारतीय समाज में परिवर्तन जरूर होगा तभी तो वह कहते हैं– ''बदल रहा है और बदलेगा।''[6]

धन और जीवन का सम्बन्ध बहुत पुराना है। यह सच है कि बिना धन के कोई कार्य नहीं हो सकता लेकिन यह भी सच है कि जीवन के सारे सुख पैसे से नहीं खरीदे जा सकते। उन लोगों के लिए धन कितना जरूरी है जो परिश्रम करने के बाद भी दूसरे के पराधीन होते हैं। दलितों का सदियों से शोषण धनाभाव के कारण भी हुआ है। इसके साथ ही रूढ़ियों एवं परम्पराओं ने दलितों के विकास में सदैव कैदखाने का काम किया है। दलितों का जीवन उस पक्षी की भाँति है जिसके पर काट दिए गए हों। भीकू जी अपनी बेबसी एवं लाचारी से दुःखी होकर अपने आपसे सवाल पूछते हैं– ''हम क्यों ऐसे पराधीन हैं? स्वतन्त्र देश में रहकर भी रूढ़ि एवं परम्पराओं से पराधीन। दरवाजे के पास, छत की बल्ली में टंगा मीठू का पिंजरा देखकर भीकूजी दया भाव से भर गए– बेचारे पक्षी को कैद करके पिंजरे में रखा है। कहीं वह उड़ न जाए, इसके लिए उसके पंख काट दिए हैं। वे सोचने लगे उच्च वर्णीय लोगों ने हमें भी इसी तरह आश्रित बना रखा है।''[7] अनेक कष्टों को झेलते हुए भी भीकू जी जैसे लोगों ने प्रकृति प्रेम एवं मानव प्रेम को सदैव जीवित रखा है। भीकू जी ने सदैव 'जियो और जीने दो' का सिद्धान्त अपनाया है तभी तो वे सोचते हैं– ''मानवता की प्रकृति की और पर्यावरण की चिन्ता हम सबको करनी चाहिए।''[8]

समाज में कोई व्यक्ति या समूह तभी आगे बढ़ सकता है जब उसे सभी के बराबर मौका दिया जाए लेकिन हिन्दू धर्म में इस जाति भेदभाव के कारण दलितों को प्राथमिक स्तर ही अपमान का सामना करना पड़ता है। इसी तरह के अपमान को देखकर भीकू जी क्रोध में आ गए उसका विरोध करते हुए जब मास्टर के पास जाते हैं तब मास्टर आपस में बात करते हैं कि– ''साले, कंजर, मेहतर, मांग, बसोर क्यों चले आते हैं पढ़ने ? जाओ अपने माँ–बाप के साथ सड़के झाड़ो कचरा उठाओ, मैला

उठाओ, मरे ढोर उठाओ।''[9] इतना अपमान सहने के बाद भी भीकूजी अपने गुससे को अन्दर ही पी जाते हैं क्योंकि उनका बेटा रामकिशन भी उसी स्कूल में पढ़ता है। उनके गुस्से का परिणाम रामकिशन को भोगना पड़ेगा। इससे स्पष्ट होता है कि शिक्षा प्राप्त करने के लिए दलितों को कितना मानसिक और शारीरिक कष्ट उठाना पड़ता है।

चन्दरी ऐसी सशक्त स्त्री पात्र है जो सामन्ती अध्यापकों की गुण्डई का तीखा विरोध करती है। तभी तो माखनलाल से कहती है– ''अरे पापी अपनी बहन–बेटियों को भी पाप की नजर से देखते हो? तुम्हारे धर्म ग्रन्थ में यही सब लिखा है क्या ? अपनी कथा कहानियों में यही सब बताते हो ? पाखण्डियों अब तो शर्म करो।''[10] इतना ही नहीं, जब इनका किसी प्रकार बस नहीं चलता था तो वे सवर्ण अध्यापक या तो दलित बच्चों को सबसे कम नम्बर देते थे या फेल कर देते थे जिससे वे निराश होकर स्कूल छोड़ देते थे।

भारतीय समाज में जितनी भी प्राकृतिक कलाएँ हैं। जैसे– नाचना, गाना, सूप, टोकरी डलिया आदि बनाना, धनुष–बाण आदि चलाना, बाँसुरी, तबला, ढोलक आदि बजाना दलित इन सभी कलाओं में निपुण थे। सामन्तों ने इनकी कलाओं को केवल अपने मनोरंजन के लिए इस्तेमाल किया कभी निपुण कलाकार की तरह सम्मान नहीं दिया। रामकिशन की बाँसुरी को सुनकर सभी लोग खुश हो जाते हैं। उसे इनाम भी देते हैं लेकिन भरपूर सम्मान न मिलने से उसे ऐसे कई इनाम लेने में शर्म आती है। इतिहास इस बात का गवाह है कि झलकारी बाई, कर्ण एवं एकलव्य जैसे कई वीर हैं लेकिन जातिगत द्वेष के कारण इनको समाज में वह स्थान नहीं मिला जो मिलना चाहिए।

वर्तमान समय में आदिवासियों की तरह निशानेबाजी में कोई निपुण हो ही नहीं सकता है लेकिन उपेक्षा के कारण राज्य सरकार या भारत सरकार इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय खेलों में जाने के लिए अवसर ही नहीं देती हें। ईश्वर किसी का भाग्य विधाता नहीं होता है। मनुष्य ही अपनी मेहनत एवं कर्म के बल पर अपना भाग्य बना और बिगाड़ सकता है। भीकूजी की पत्नी चन्दरी इन बातों को धीरे–धीरे समझने लगी है साथ ही दूसरों को समझाने लगी है। तभी तो भीकू जी को समझाते हुए कहती है– ''भला कोई अपने शरीर सहित देवधाम या स्वर्ग कैसे पहुँच सकता है? हाड़–मांस का शरीर तो मिट्टी बनकर यहीं रह जाता है। मुझे तो ये सब बातें झूठी लगती हैं और स्वर्ग भी कहाँ है ? ये सब मनगढ़न्त बातें हैं''[11]

सामाजिक परिवर्तन के कारण ही दलितों की चेतना का विकास हुआ है। अब वे धीरे–धीरे कर्म और भगवान् के विषय में जानने लगे हैं। वे अब भाग्य और भगवान् को छोड़कर कर्म में विश्वास करने लगे हें।

हिन्दू धर्म की हिंसा और अन्धविश्वास के शिकार दलित सदैव से रहे हैं। जब से दलितों ने गौतम बुद्ध के मानवता के सन्देश एवं अहिंसा के मार्ग के विषय में सुनना और समझना शुरू किया है तब से दलितों के विचारों में हिंसा के प्रति बड़ा क्रान्तिकारी परिवर्तन हुआ है। भीकूजीर पर डॉ0 अम्बेडकर एवं गौतम बुद्ध के विचारों का प्रभाव पड़ा है तभी से उन्होंने हिंसा एवं अन्धविश्वास का विरोध किया है।

दहेज प्रथा भारतीय समाज की बहुत पुरानी समस्या है। यह प्रथा सामन्ती लोगों के यहाँ से होती हुई दलित समाज में भी प्रवेश कर गई है। दलितों में दहेज प्रथा पहले नहीं थी लेकिन सवर्णों की तरह झूठी शान–शौकत दिखाने के लिए आज भी लोग दहेज लेते और देते हैं। भीकू जी चन्दरी और रामकिशन तीनों ही दहेज प्रथा का विरोध करते हैं। तभी तो वे कहते हैं कि ''यहाँ बेटी परिवार के लिए बोझ नहीं होती। मगर कुछ दलित लोग सवर्णों की नकल करते हुए अपनी झूठी शान दिखाने के लिए कर्ज लेकर अपनी बेटी को दहेज के साथ ससुराल भेजते हैं। यह देखकर दूसरे लालची लोग दहेज नहीं चाहिए की बात छोड़कर पहले दहेज बाद में दुल्हन का व्यवहार करते हैं। ऐसे लोग मूल निवासी संस्कृति को भूलकर स्त्री शक्ति का अपमान करते हैं।''[12] गरीबी एवं अनमेल विवाह का सम्बन्ध भी किसी से छिपा नहीं है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण एवं अशिक्षा के कारण दलितों एवं पिछड़े वर्ग में लोग अपनी कन्या का अनमेल विवाह कर देते हैं। इस प्रकार के सम्बन्ध को कन्या जीती नहीं बल्कि जीवन भर ढोती है। इसका प्रभाव उसके आने वाली पीढ़ियों पर पड़ता है।

दलितों ने अपने जीवन में कितना भी दुःख दर्द सहा लेकिन स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं किया उन्होंने धर्म के नाम पर भीख मांगना जैसी परमपराओं का सदैव विरोध किया है। अर्थात् दलित तर्कहीन जीवन के बजाए तर्कपूर्ण जीवन में विश्वास करते हैं। चन्द्र ग्रहण के समय जब सेवा नगर के दलित दान मांगने के लिए निकलते हैं तब भीकू जी इस अन्धविश्वास का विरोध करते हुए कहते हैं कि – ''यह ग्रहण का दान हमें नहीं चाहिए हमें बस अपनी मेहनत की ही रोटी चाहिए'' अब तो रामकिशन भी सबको ग्रहण का दान मांगने से मना करने लगा है। चन्दरी भी यह बात समझती है, दान लेने के नाम पर भीख मांगना हमारे स्वाभिमान के विरुद्ध है।''[13]

युवा पीढ़ी द्वारा रूढ़ियों का विरोध किया गया है लेखिका ने नई पीढ़ी से सामाजिक परिवर्तन की नींच की शुरूआत की है। पुरानी पीढ़ी अशिक्षा, गरीबी एवं लाचारी के कारण विरोध करने में असमर्थ रही लेकिन युवा पीढ़ी अपने ढंग से अपना जीवन जीना चाहती है। बुद्ध के क्षण–क्षण परिवर्तन है का प्रभाव भी उपन्यास में देखा जा सकता है। दुःख एवं मुसीबत के समय शत्रु एवं मित्र सब एक हो जाते हैं। आजादी के पहले सवर्ण एवं दलित हिन्दू एवं मुसलमान सब एक साथ खड़े थे। यही एकता आजादी के बाद दलितों में भी आपस में देखने को मिलती है। यही कारण है कि बुधिया एवं कालीचरण चन्दरी के विषय में कहते हैं कि– ''दुःख–सुख में सहयोग देने वाले अपने ही होते हैं।''[14]

भारतीय समाज के सभी वर्गों में लिंगभेद की समस्या किसी न किसी रूप में बनी हुई है। जब से समाज में शिक्षा का प्रसार–प्रचार हुआ है तब से छोटा परिवार सुखी परिवार वाली विचारधारा का युवा पीढ़ी समर्थन करती है। दलितों में भी सामाजिक व्यवस्था के

कारण लिंगभेद की समस्या आजादी के बाद भी बनी हुई है। लोग बेटा–बेटी में भेद करते हैं। चन्दरी समझदार होने के बाद भी रामकिशन का दूसरा विवाह इसलिए करना चाहती है कि उसे बेटा नहीं हुआ– ''लोगों की बातें सुनते–सुनते उसने भी निर्णय कर लिया है– पोते का मुँह देखने के लिए मै अपने रामकिशन की दूसरी शादी करूँगी।''[15] इसके बाद रामकिशन सबका पुरजोर विरोध करता है यहाँ सुशीला जी ने युवा पीढ़ी के द्वारा पुरानी रूढ़ियों को भी समाप्त करने का प्रयास किया है। तभी एक स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकेगा। स्त्री जीवन के विषय में लेखिका ने बहुत सुन्दर ढंग से अपने विचारों को प्रस्तुत किया है। स्कूल में जहाँ लड़कों के लिए शिक्षा की व्यवस्था नहीं है वहाँ लड़कियों की स्थिति क्या होगी ? छुआछूत और लिंग भेदभाव के कारण अनेक लड़कियाँ घर से अनुमति मिलने के बाद भी अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ देती हैं। नीलिमा एक ऐसी स्त्री पात्र है जिसनें जीवन के हर कदम पर अपना तथा अपने परिवार का अपमान होते देखा है। तभी तो वह भीमनगर एवं सेवानगर के लोगों के विषय में कहती है कि – ''हम लोग समाज से दूर किए गए लोग हैं। अछूत, अपमानित और बहिष्कृत लोग। उसने वहाँ अपने मामा का अपमान होते देखा। जब सवर्णों को हमसे काम रहता है तब वे बुलाकर काम करवाते हैं। काम हो जाने के बाद दुत्कार कर अपमानित करते हैं, फिर भी हर बार उनको काम करना ही है। नहीं तो वे लोग मारने–पीटने की धमकी देते हैं, गाली देकर अपमानित करते हैं।''[16]

कहा जाता है कि जब अपमान और अन्याय की अति होती है तब किसी न किसी को तो इसका जवाब देना ही पड़ता है। नीलिमा के सामने सुमेर सिंह जब उनके भाई दुलीचन्द को माँ–बहन की गाली देता है। इसके बाद दुलीचन्द उसका भरपूर विरोध करता है। तभी नीलिमा निश्चय करती है कि जब तक हम लोग शिक्षित नहीं होंगे, संगठित नहीं होंगे तब तक इसी प्रकार शोषण का शिकार होते रहेंगे। चन्दरी अपने मान–सम्मान के खातिर नौकरी को भी छोड़ दिया तभी तो नीलिमा उनसे बहुत खुश थी। अब नीलिमा को भी विश्वास हो गया कि लोग भगवान् और इन्सान में फर्क समझने लगे। तभी तो नीलिमा सोचती है –''हमारे साथ अन्याय कब से हो रहा है ? और कब तक होता रहेगा ? अब इसका अन्त होना चाहिए। कौन कहाँ पैदा हो यह किसके बस में है ? फिर भी जो जहाँ पैदा हो गया, तो पैदा होते ही उसकी किस्मत की पाटी लिख दी जाती है। ब्राह्मण का बच्चा ब्राह्मण, शूद्र का बच्चा शूद्र अछूत का बच्चा अछूत। उस समय के वातावरण में इससे ज्यादा और क्या सोचा जा सकता था ? भले ही कितना भी पढ़–लिख जाओ, काम अपने बाप–दादाओं का ही करना है। ऐसी विचारधारा के बीच अछूत वर्ग के लोगों को षड़यन्त्रपूर्वक शिक्षा से वंचित रखा जाता। जो पढ़ना चाहता, उसे इतना हतोत्साहित किया जाता है कि वह स्वयं पढ़ना छोड़कर अपने पूर्वजों के रोजगार से लग जाता। नीलिमा लगातार यह सब देख रही है और सवर्ण समाज की मानसिकता को समझ रही है। वह दलित समाज के लोगों को ये बातें समझाने का काम करने लगी।''[17]

नीलिमा की तरह आकाश भी संगठन बनाकर दलित बस्तियों में जाता है और वहाँ के बच्चों को एवं अन्य लोगों को शिक्षा के महत्व के विषय में बताता है क्योंकि वह भलीभाँति जानता है कि शिक्षा के बिना दलितों का भला नहीं होने वाला है। इसके अतिरिक्त आकाश को जब राजेश डागोर से यह बात पता चलती है कि दलित शादियों में फिजूल खर्च भी करते हैं तब वह इसे रोकने के लिए संकल्प लेता है और कहता है कि– ''अपनी जाति समुदाय में जहाँ भी शादी होगी, हम वहाँ जाकर लोगों को समझायेंगे और शादी के खर्च में कटौती करवाकर उनका रुपया उन्हीं के बच्चों की पढ़ाई में खर्च करने के लिए फिक्स डिपॉजिट करवाएंगे।''[18]

नीलिमा ने शिक्षा के लिए जिन बन्धनों को तोड़ा उनके लिए वह काबिले तारीफ है। नीलिमा के विषय में लेखिका कहती है कि–''कन्हान में सिर्फ मैट्रिक तक ही स्कूल है। कन्हान से 3 किलोमीटर दूर कामठी में कॉलेज है। नीलिमा को यह शंका थी कि उसके माता–पिता उसे कॉलेज भेजने के लिए तैयार हो पायेंगे या नहीं ? यह उसका बहुत बड़ा सपना था कि वह कॉलेज में पढ़े, कॉलेज जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करे उसकी जाति के लिए यहाँ तक पहुँच पाना बहुत बड़ी बात है और फिर लड़की की शिक्षा यह तो बिल्कुल असम्भव बात थी, उसे नीलिमा ने सम्भव कर दिया था।''[19]

आकाश को तब यह बात पता चलती है कि दलित जाति के लोग हिन्दू धर्म की परम्पराओं एवं रीति–रिवाजों के कारण अपने बाप–दादा के जातिगत रोजगार को नहीं छोड़ रहे हैं। तब आकाश उनका विरोध करने लगता है। आकाश का विरोध अपने परिवार से शुरू होकर पूरे दलित समाज में फैल जाता है। वह अच्छी तरह से जानता है कि सोंच में परिवर्तन किये बिना दलितों को समाज में सम्मान मिलना मुश्किल है। तभी तो वह अपने मामा जी से नाराज होकर कहता है– ''क्या मामाजी आप इसी रोजगार में अटके हो। दुनिया कितनी बदलती जा रही है। मगर हमारे लोग अपने ही रोजगार से चिपके हैं। आप समझदार हो, अपने लोगों को अच्छा रास्ता दिखाओ। डॉ0 अम्बेडकर ने हम सबके लिए प्रगति का कितना बड़ा रास्ता बना दिया है। हम लोग भी उसी रास्ते पर चलेंगे। महार जाति के लोगों ने अपने जीवन में प्रगति और परिवर्तन, इसी नये मार्ग पर चलकर किया है। आप भी परिवर्तन के इस मार्ग पर चलो। रोजगार में परिवर्तन करो।''[20]

नीलिमा सभी के जीवन की समस्याओं को ही नहीं सुलझाती है बल्कि समस्त दलित जातियों की आपसी भेद–भाव को मिटाने में अपना योगदान देती है। जब उसे आभास होता है कि मेरे लोग हिन्दू धर्म की परम्परा के कारण आपस में ही एक–दूसरे से झगड़ रहे हैं तब वह उनके बीच में पहुँचकर समझाते हुए कहती है– ''ऊँची जाति वालों से तुमने क्या यही बात सीखी है ? आपस में भेद–भाव करना बस! अगर तुम उनकी सच्चाई को समझ लेती, तो उनकी जूती अपने सिर पर लेकर नहीं घूमती। वे हमें आपस में लड़वाकर ही बड़े बने हैं। यदि हम एक हो जाएं तो वे अपने सामने कहीं के नहीं। वे हमको छोटा

बताकर, बड़े कहलाते हैं फिर भी हम उनकी नकल करते हैं।''[21]

लेखिका ने इस उपन्यास का समापन नीलिमा एवं आकाश के विवाह के साथ सम्पन्न किया है। नीलिमा और आकाश ने अपने विवाह के समय सारी पुरानी परम्पराओं को तोड़कर नयी परम्पराओं के अनुसार अपने विवाह को सम्पन्न कराया। नीलिमा एवं आकाश ने जो रास्ते दूसरों को चलने के लिए बताए उस पर खुद चलकर सामाजिक परिवर्तन की नयी शुरूआत की। इस काम को करने के लिए आकाश ने अपने पिता और चन्द्र मामा सभी से कहा कि – ''अब जमाना बदल रहा है। पुराना सब कुछ बदलना होगा तभी नयी रीति, परम्परायें शुरू होंगी। पुरानी परम्पराओं से चिपके रहकर हम नई बातों की अच्छाई और लाभ को समझ नहीं पाते हैं। विवाह के बाद नये जीवन की शुरूआत गौतम बुद्ध के बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय के सन्देश से होना चाहिए। डॉ0 अम्बेडकर के त्याग संघर्श और समाज कल्याण के कार्य से प्रेरणा लेने के संकल्प से शुरू होना चाहिए। तभी हमारी पीढ़ियाँ प्रगति एवं परिवर्तन के मार्ग पर आगे बढ़ सकेंगी।''[22]

इस उपन्यास के समापन के समय लेखिका ने नीलिमा और आकाश के विवाह को एक ऐतिहासिक घटना बताया है। नीलिमा और आकाश केवल पति–पत्नी नहीं बल्कि दोनों एक साथ मिलकर नीला आकाश का निर्माण करेंगे जो हम सबका होगा। इस नीले आकाश की नई दुनिया हमारी होगी जहाँ ऊँच–नीच, छोटा–बड़ा नहीं होगा। सभी दलित लोग आपस मे मिलकर प्रेम से रहेंगे तभी वे समता सम्मान के साथ प्रगति के रास्ते पर बढ़ेंगे। इस समय हम दलित भी ऊँचाई को छूते हुए सामाजिक आन्दोलन का झण्डा आकाश तक लहरायेंगे। अर्थात् लेखिका ने अपने उपन्यास में सभी सामाजिक समस्याओं को उठाते हुए युवा पीढ़ी के द्वारा उन सामाजिक समस्याओं का हल खोजने का प्रयास किया है, क्योंकि प्रत्येक समय की विचारधारा एक जैसे नहीं रह सकती है। क्षण–क्षण परिवर्तनशील है। यह सन्देश पूरे विश्व को गौतम बुद्ध पहले ही दे चुके हैं।

निष्कर्ष

साहित्यकार जिस समाज में पैदा होता है उस समाज की प्रत्येक क्रिया–प्रतिक्रिया का प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। दूसरी बात यह है कि जन्म से कोई व्यक्ति गुण्डा, विरोधी, सन्त, राजनीतिज्ञ, या विद्वान् नहीं होता है जिसके जीवन का परिवेश जैसा होता है, उसकी सोच भी उसी से बनती व बिगड़ती है। यही बात डॉ0 सुशीला टाकभौरे के ऊपर भी लागू होती है। उन्होंने अपने समाज में जैसा जीवन जिया वैसा ही समाज को वापस दिया। उनके सभी उपन्यासों मे समाज की प्रत्येक सच्चाई को बड़ी ईमानदारीर के साथ प्रस्तुत किया गया है। 'नीला आकाश' ऐसा उपन्यास है जो समाज को किस प्रकार आपस में जोड़ा जाए ? इसका समाधान खोजने को मजबूर करता है। इस उपन्यास में राजनीतिक–सामाजिक एवं धार्मिक जीवन की झाँकी अलग तरीके से देखने को मिलती है।

'नीला आकाश' नई समाज व्यवस्था, नई सोच, नई ऊर्जा एवं युवा नई पीढ़ी साथ लेकर चलने वाला उपन्यास है। लेखिका ने सर्वप्रथम समाज में दलितों में आपसी भाईचारा, दलित पुरुषों एवं स्त्री में भाईचारा तत्पश्चात् दलित व सवर्णों में आपसी भाईचारे की बात की है। साथ में वे भी बताना नहीं भूलती है कि एक बेहतर समाज के लिए जाति व्यवस्था जहर की तरह काम करती है। इस जहर का निवारण पहले हमें अपनी सोच में परिवर्तन करने से प्रारम्भ करना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 7–8.*
2. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 12.*
3. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 21.*
4. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 22.*
5. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 26.*
6. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 26–27*
7. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 29.*
8. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 30.*
9. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 34.*
10. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 37.*
11. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 44.*
12. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 53.*
13. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 57.*
14. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 59.*

15. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 60.*
16. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 67.*
17. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 70.*
18. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 72.*
19. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 74.*
20. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 76.*
21. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 78.*
22. *सुशीला टाकभौरे, नीला आकाश, (उपन्यास), विश्वभारती प्रकाशन, धनवड़े चेम्बर, सीबरड़ी, नागपुर, प्रथम संस्करण, 01 जनवरी, 2013, पृ0 104.*